

विचार बिन्दु

कर्मों की आवाज शब्दों से ऊंची होती है। -कहावत

चिकित्सा सेवाएं
वेंटिलेटर पर!

राजस्थान में (ये पंक्तियां लिखी जाने तक) ज़ारी निजी अस्पतालों की हड़ताल ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि हमारे यहाँ स्वास्थ्य सेवा केवल इलाज का साधन नहीं, बल्कि समय-समय पर आयोजित होने वाला एक सामूहिक नाटक भी है। एक ऐसा नाटक जिसमें किरदार तय हैं, संवाद तय हैं, और अंत भी लगभग तय ही होता है। फर्क बस इतना है कि इस नाटक का टिकट हमेशा मरीज को ही खरीदना पड़ता है, और वह भी अपनी जेब से नहीं, अपने धैर्य और कभी-कभी अपनी जान से भी। जयपुर में एक डॉक्टर की गिरफ्तारी हुई। उन पर गम्भीर आर्थिक अनियमितता का आरोप था। डॉक्टरों के संगठित समूह को बुरा लगा। यह स्वाभाविक है। आखिर आत्मसम्मान कोई मामूली चीज तो है नहीं, जिसे पुलिस की जीप में बैठाकर ले जाया जा सके। सो, आत्मसम्मान की रक्षा का सबसे उपयुक्त तरीका खोजा गया। खोजने की भी जरूरत नहीं थी। पता ही था। उसे ही काम में लिया गया। हर जोर जुलूम की टक्कर में हड़ताल हमारा नारा है। मरीजों को समझना चाहिए कि डॉक्टर भी इंसान हैं, केवल अलवर्टिपण्टो को ही नहीं उन्हें भी गुस्सा आता है, और जब गुस्सा आता है तो बतर्ज तबेले की बला बंदर के सर, गुस्से का शिकार मरीज को होना पड़ता है। सो हो रहे हैं। उधर सरकार भी कम दिलचस्प नहीं है। उसे भी लगा कि कानून का राज स्थापित करना जरूरी है। और कानून का राज स्थापित करने का सबसे प्रभावशाली तरीका क्या है? एक डॉक्टर को इस तरह गिरफ्तार किया जाए कि बाकी डॉक्टरों को यह स्पष्ट संदेश मिल जाए कि सत्ता किसकी है। संवाद, समझाइश, या पेशेवर मर्यादा वगैरह ये सब किताबों में अच्छे लगते हैं, जमीनी हकीकत में नहीं।

इस पूरे घटनाक्रम में सबसे दिलचस्प किंतु दयनीय पात्र है जनता या कहे मरीज। वह हर दृश्य में मौजूद है, लेकिन उसकी कोई संवाद-रेखा नहीं है। वह बस इधर-उधर भागता है, लाइन में खड़ा होता है, दरवाजों से धकियाया या लौटाया जाता है, और अंत में यह समझने की कोशिश करता है कि आखिर उसकी गलती क्या थी? शायद यही कि उसने बीमार पड़ने की गुस्ताखी कैसे की? वह भी ऐसे समय में जब डॉक्टरों और सरकार के बीच गरिमा बनाम कानून का महासमुकाबला चल रहा था। और वैसे सरकार ने अपना फर्ज भी बखूबी निभाया। उसने घोषणा की कि राज्य में स्वास्थ्य सेवाएं सुचारु चल रही हैं। कुछ छोटी-मोटी गुमाइशी गतिविधियां भी उसने की, ताकि हम विश्वास कर सकें कि हम हमारे लिए फिक्रमंद हैं!

हड़ताल के कारण राज्य का सबसे बड़ा अस्पताल, जयपुर का सवाई मान सिंह अस्पताल में ऐसा लग रहा था मानो कोई भेला लगा हो। फर्क सिर्फ इतना था कि यहाँ झूले नहीं, स्टूचर थे; और मिठाइयों की जगह दवाइयों की पर्चियां बंट रही थीं। बंट क्या रही थीं, उनके लिए छीना झपटी चल रही थी। जो लोग कभी इस अस्पताल की भीड़ को व्यवस्था की विफलता मानते थे, उन्होंने उस दिन जाना कि विफलता भी एक सपेक्ष शब्द है-क्योंकि इससे बदतर भी कुछ हो सकता है। जो रहा था। दूसरी तरफ अलग ही दृश्य था। जहाँ आम दिनों में निजी अस्पतालों के बाहर पार्किंग तक न मिलती थी, वहाँ हड़ताल के चलते ऐसा सत्राटा था मानो किसी जादुई छड़ी के घूमने से पूरा शहर स्वस्थ हो गया है। वैसे, यह सत्राटा केवल इमारतों में नहीं था, बल्कि उस भरोसे में भी था, जो मरीज इन संस्थानों पर करता है।

उधर सोशल मीडिया पर अलग ही माहौल था। कुछ लोग निजी अस्पतालों को खुले आम लूट केंद्र घोषित कर रहे थे तो जवाबी हमले के रूप में कहा जा रहा था कि तुम चाहते हो क्यों? आखिर सरकार ने इतने सारे अस्पताल खोले हैं, उनकी सेवाओं का लाभ क्यों नहीं लेते? इस भाषिक युद्ध में किसी को इतना याद कर लेने की जरूरत नहीं थी कि सरकारी सेवाएं न केवल अपर्याप्त हैं (ऊंट के मुँह में जौरा याद है किसी को?) सच तो यह है कि सरकार उनको बेहतर बनाने की बजाय खुद निजी चिकित्सा सेवाओं को प्रोत्साहित करने में लगी है। सरकारी ने बारीक कहे कह दिया है कि नागरिक का स्वास्थ्य उसकी चिंता का विषय नहीं है। मुस्लिम अर्पण जान-माल की रक्षा खुद करे। सरकारी अस्पताल बदहाली का नमूना बनते जा रहे हैं। न सुविधाएं हैं, न स्टाफ और न बजट। बजट लगातार कम किया जा रहा है। बेचारा मरीज निजी अस्पतालों में न जाए तो क्या करे?

अस्पतालों की हड़ताल ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि हमारे यहाँ स्वास्थ्य सेवा केवल इलाज का साधन नहीं, बल्कि समय-समय पर आयोजित होने वाला एक सामूहिक नाटक भी है। एक ऐसा नाटक जिसमें किरदार तय हैं, संवाद तय हैं, और अंत भी लगभग तय ही होता है। फर्क बस इतना है कि इस नाटक का टिकट हमेशा मरीज को ही खरीदना पड़ता है, और वह भी अपनी जेब से नहीं, अपने धैर्य और कभी-कभी अपनी जान से भी।

दुरुपयोग किया, तो निजी अस्पतालों और डॉक्टरों ने भी बहती गंगा में हाथ धोने से परहेज नहीं किया। एक बहुत बड़ी गड़बड़ प्रायः यह होने लगी कि सरकार की तरफ से अस्पतालों को भुगतान में बहुत देरी की जाने लगी। इस बार भी निजी अस्पतालों की एक शिकायत यह है कि उन्हें नौ-दस महीनों से भुगतान नहीं मिला है। यह शिकायत थोड़े-थोड़े दिनों में उभरती रहती है और सरकार है कि सरक-सरक कर चलना अपना धर्म माने बैठे। मुझ जैसे अज्ञानियों के लिए यह पहली अबूझ है कि आखिर अस्पतालों को समय पर भुगतान क्यों नहीं किया जाता, और क्यों नहीं किया जा सकता है। क्या इस बात की किसी को परवाह है कि वर्तमान और भूतपूर्व सरकारी कर्मचारियों को कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है? वह भी तब जब कि वे इस सेवा के लिए अग्रिम भुगतान कर चुके हैं।

अभी हम देख रहे हैं कि डॉक्टरों का तर्क है कि उनकी गरिमा से समझौता नहीं किया जा सकता। बिल्कुल अलग किस्म की पर वित्तीय अनियमितता का आरोप लगे तो क्या डॉक्टरों के संगठनों का एकजुट होकर इसके पक्ष में आंदोलित होना तर्क संगत कहा जाएगा? उनसे भी एक छोटा-सा प्रश्न तो किया हो जाना चाहिए। क्या मरीज को जिंदगी से समझौता किया जा सकता है? उनकी लड़ाई सरकार से है या मरीज से? या फिर उन्होंने तो यह मान लिया है कि गिरफ्तारी और जीवन के बीच यदि चुनाव करना पड़े, तो गरिमा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए? इस हड़ताल ने हमें यह भी बता दिया है कि निजी अस्पताल अब केवल इलाज के केंद्र नहीं, बल्कि व्यवस्था को 'पॉज' करने वाले बटन बन चुके हैं। एक दिन के लिए सेवाएं बंद करो, और पूरा शहर रुक जाता है। सरकारी अस्पतालों में भीड़ इस तरह उमड़ती है, मानो किसी ने अचानक घोषणा कर दी हो कि आज सभी सेवाएं मुफ्त हैं। भले ही यह 'मुफ्त' केवल कागजों में ही क्यों न हो। सरकार ने हमेशा की तरह स्थिति पर 'नजर बनाए रखी' है। जैसे अल्बर्ट हॉल म्यूजियम में रखी कोई पुरानी वस्तु, जिसे देखा तो जाता है, पर छुआ नहीं जाता। यह 'नजर' बहुत कुछ देखती है, लेकिन सिवा बहुरकम करती है। और जब तक कुछ किया जाता है, तब तक अक्सर बहुत कुछ बिगाड़ चुका होता है।

यह पूरा घटनाक्रम हमें एक असहज करने वाली सच्चाई के सामने ला खड़ा करता है-क्या स्वास्थ्य सेवा अब भी सेवा रह गई है, या वह पूरी तरह से एक उद्योग, एक शक्ति संरचना और एक सौदेबाजी का मंच बन चुकी है? यदि एक डॉक्टर की गिरफ्तारी पूरे राज्य की चिकित्सा व्यवस्था को ठप कर सकती है, तो यह केवल एक घटना नहीं, बल्कि एक संकेत है कि व्यवस्था का संतुलन कहीं न कहीं बहुत गंभीर रूप से बिगाड़ चुका है।

अब सवाल यह है कि आगे क्या होगा? शायद एक बैठक होगी, कुछ आश्वासन दिए जाएंगे, हड़ताल खत्म हो जाएगी, और सब कुछ सामान्य हो जाएगा। मरीज फिर से अस्पतालों में जाने लगेंगे, डॉक्टर फिर से इलाज करने लगेंगे, और सरकार फिर से अपनी फाइलों में व्यस्त हो जाएगी। और हम सब मिलकर राहत की सांस लेंगे। लेकिन कितने तक? जब तक अगला संकेत न आ जाए। यथाथय यह है कि असली समस्या का समाधान करना हमारे सिस्टम की प्राथमिकता कभी रहा ही नहीं। स्थिति को किसी तरह संभाल लेना, उसे टाल देना, और फिर भूल जाना-हमारी प्राथमिकता तो यह रही है। राजस्थान की यह हड़ताल भी शायद कुछ दिनों बाद एक खबर बनकर रह जाएगी। जिंदगी फिर से अपने ढर्रे पर चलने लगेगी। हम में से अधिकांश इन असुविधाओं को विस्मृत कर देंगे। सिवा उनके जिन्होंने इस हड़ताल की वजह से अपने किसी प्रियजन को खो दिया होगा। लेकिन जो सवाल इसने उठाए हैं, वे यहीं रहेंगे। चुपचाप, अनुचित, और अगले विस्फोट का इंतजार करते हुए।

और तब तक, मरीजों से बस यही अपेक्षा है कि वे धैर्य रखें, समझदारी दिखाएं, और सबसे जरूरी बात यह कि बीमार पड़ने से बचें। क्योंकि इस देश में बीमार पड़ना अब केवल एक शारीरिक स्थिति नहीं, बल्कि एक प्रशासनिक और सामाजिक जोखिम भी है।

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

उदयपुर के डेरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी
महाविद्यालय की स्थापना

अभी तक की यात्रा से संबंधित जानने योग्य महत्वपूर्ण पहलू



वीर बहादुर सिंह

कृषि से सम्बंधित उदयपुर के महाविद्यालयों में मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय को छोड़कर डेरी विज्ञान महाविद्यालय को अपेक्षा कृत नवीन कह सकते हैं, परन्तु वो भी अब इतना नवीन नहीं रहा क्योंकि इसे स्थापित हुए अब लगभग 48 वर्ष हो चुके हैं। इसमें खाद्य प्रौद्योगिकी प्रोग्राम वर्ष 1998 में जोड़ा गया जिसकी अनुशंसा एग्रीकल्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अंतगत प्रदेश सरकार को मिली विदेशी सहायता के खर्च के आयामों पर पेश की गयी रिपोर्ट में की गई थी। डेरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी की वर्तमान बिल्डिंग इसी प्रोजेक्ट के अंतगत बनाई गई, और चार वर्ष का खाद्य प्रौद्योगिकी स्नातक पाठ्यक्रम अनुभववी वैज्ञानिकों यथा डॉ. पाणिप्या, डॉ. प्रथी, डॉ. वानखेडे, डिफेंस फूड रिसर्च लैब मैसूर के निदेशक के अलावा पंतनगर, लुधियाना, हिसार, आनंद आदि ने तीन दिन तक सम्बाद करके बनाया जिसे विश्वविद्यालय की अकादमिक समिति ने अनुमोदित किया। इस प्रकार यह खाद्य प्रौद्योगिकी स्नातक पाठ्यक्रम डेरी के पाठ्यक्रम के समानांतर आरम्भ हुआ था।

डेरी विज्ञान महाविद्यालय की शुरुआत 1978 में हो गई थी। राजस्थान कृषि महाविद्यालय में डेरी विज्ञान विभाग हुआ करता था जिसके अंतर्गत डेरी विज्ञान के स्नातकोत्तर विषय और कृषि स्नातक के डेरी विषय पढ़ाये जाते थे। दोनों पाठ्यक्रमों के लिए वांछित फैकल्टी भी सदैव उपलब्ध रही। डेरी विज्ञान महाविद्यालय बनते ही कृषि संकाय का

तत्कालीन डेरी विभाग डेरी कॉलेज से सम्बन्ध हो गया और सभी स्टाफ, बिल्डिंग, प्लांट मशीनरी आदि डेरी विज्ञान महाविद्यालय के अधीन हो गए। यहाँ बताते चलें कि डेरी विज्ञान में स्नातक पाठ्यक्रम की अनुशंसा राज्य सरकार पहले ही कर चुकी थी लेकिन किन्ही कारणों से तत्कालीन विश्वविद्यालय इस पर कोई कार्यवाही नहीं कर सका। फिर डेरी विकास के अंतर्गत प्रदेश में ऑपरेशन फलड 1 और ऑपरेशन फलड 2 के अंतर्गत प्रदेश में बड़े पैमाने पर संगठनात्मक और संरचनात्मक कार्य आरम्भ हो चुका था। इसलिए यही समय अधिक उपयुक्त होते हुए डेरी विज्ञान की स्नातक शिक्षा को आरम्भ करने का प्लान बनाया गया ताकि नए स्थापित संयंत्रों को संचालित करने के लिए उपयुक्त टेक्निकल मैनेजर मिल सकें। फलस्वरूप इस प्रोग्राम को संचालित करने के लिए विश्वविद्यालय में एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया जिसमें प्रदेश के बाहर से भी डेरी वैज्ञानिक और अनुभववी शिक्षक मौजूद थे। उस समय जोबनेर स्थित कृषि महाविद्यालय में डेरी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत था। वर्कशॉप से आमंत्रण के लिए मैंने भी उदयपुर आकर दो दिन मीटिंग में भाग लिया। तत्कालीन डेरी कृषि अभियंत्रकों डॉ. के.एन. नाग उस समय इस प्रोग्राम को अपने कॉलेज में ले जाने को प्रयासरत थे लेकिन डॉ. रावत और डीन गुजरात के आनंद स्थित महाविद्यालय के डीन ने इसके विपरीत प्रस्ताव रखे क्योंकि यह माना गया कि अलग कॉलेज से ही विषय और उसके विस्तार व अनुसन्धान को सही दिशा मिलेगी। संवाद के दूसरे दिन समाप्त पर।

डॉ. एन.आर. भसीन जो वर्कशॉप में मौजूद थे और वे राजस्थान के उभरते डेरी परिदृश्य के जनक तो थे ही, भविष्य की योजनाओं का खाका भी उनके दिमाग में बन चुका था, न संवाद को समाप्त करते हुए अपना निर्णय दिया कि फिलहाल डेरी विज्ञान स्नातक की पढ़ाई कृषि महाविद्यालय में की जाए और शर्तें: शर्तें: इस पाठ्यक्रम को आधार मानते हुए अन्य महाविद्यालयों की भांति एक

डेरी विज्ञान महाविद्यालय को शुरूआत 1978 में हो गई थी। राजस्थान कृषि महाविद्यालय में डेरी विज्ञान विभाग हुआ करता था जिसके अंतर्गत डेरी विज्ञान के स्नातकोत्तर विषय और कृषि स्नातक के डेरी विषय पढ़ाये जाते थे। दोनों पाठ्यक्रमों के लिए वांछित फैकल्टी भी सदैव उपलब्ध रही। डेरी विज्ञान महाविद्यालय बनते ही कृषि संकाय का

डेरी विज्ञान महाविद्यालय को शुरूआत 1978 में हो गई थी। राजस्थान कृषि महाविद्यालय में डेरी विज्ञान विभाग हुआ करता था जिसके अंतर्गत डेरी विज्ञान के स्नातकोत्तर विषय और कृषि स्नातक के डेरी विषय पढ़ाये जाते थे। दोनों पाठ्यक्रमों के लिए वांछित फैकल्टी भी सदैव उपलब्ध रही। डेरी विज्ञान महाविद्यालय बनते ही कृषि संकाय का

डेरी विज्ञान महाविद्यालय को शुरूआत 1978 में हो गई थी। राजस्थान कृषि महाविद्यालय में डेरी विज्ञान विभाग हुआ करता था जिसके अंतर्गत डेरी विज्ञान के स्नातकोत्तर विषय और कृषि स्नातक के डेरी विषय पढ़ाये जाते थे। दोनों पाठ्यक्रमों के लिए वांछित फैकल्टी भी सदैव उपलब्ध रही। डेरी विज्ञान महाविद्यालय बनते ही कृषि संकाय का

डेरी विज्ञान का अलग महाविद्यालय शीघ्र बनाया जाय। डॉ. नाग की मंशा पूर्ण होती न देख उनके अनुयायी खफा हो गए जो डेरी का कॉलेज बनने के उपरान्त भी खफा बने रहे। यद्यपि अभियंत्रकी महाविद्यालय से कई टीचर डेरी कॉलेज में इंजीनियरिंग से सम्बंधित कोर्स पढ़ाने आते रहे और वह सिलसिला वर्तमान में भी इंटीग्रेटेड टीचिंग पध्दति के कारण चालू है।

बाद में डॉ.नाग बोकानेर में स्थापित कृषि विश्व विद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। लेखक भी वर्ष 1990 जुलाई में डेरी का अधिष्ठाता नियुक्त होकर जोबनेर से उदयपुर स्थानांतरित हो गए। लेखक को उदयपुर कार्य करते ऐसे अनुभव भी हुए जिससे इस बात को बल मिला कि अभी भी असंतुष्ट वर्ग अलग डेरी कॉलेज बनने का दंश मन में पाले हुए है।

लेखक ने मैत्रीय भाव से तब इंजीनियरिंग कॉलेज के कई अध्यापकों से घनिष्ठ सम्बन्ध बना लिए और डेरी कॉलेज के लिए उनका सहयोग सदैव मिलता रहा। परन्तु कतिपय वरिष्ठ टीचर्स मन में द्वेष पाले रहे और धरातल पर उसको नहीं आने दिया। उचित और सम्मानपूर्वक संवाद में लेखक सदैव अग्रणी रहा यहाँ तक कि डॉ. नाग और लेखक दोनों में रिटायर होने के पश्चात भी सामाजिक मुलाकातें होती रहीं। इससे दोनों के दिलों में कोई वर्जना तो नहीं रही लेकिन कतिपय सीनियर सदस्यों के दिल नहीं बदल सके।

उपरोक्त वर्णन से यह तो विदित होता है कि विश्वविद्यालय का एक वर्ग डेरी कॉलेज का विरोधी था हालांकि कालान्तर में इंजीनियरिंग के ही एक वरिष्ठ टीचर डेरी कॉलेज के डीन वर्षों तक बने रहे। वे डेरी कॉलेज में कोई एक शैक्षणिक अध्याय नहीं जोड़ सके बल्कि उन के कार्यकाल में डेरी कॉलेज की अनुमोदित पदों की सख्या को सरकार कम करती रही और उन्होंने उसका कोई विरोध नहीं किया। दूसरे डीन भी आये जिनमें फिर से एक इंजीनियरिंग के, एक होम साइंस से और एक कृषि संकाय से नियुक्त किये गए जिनकी योग्यता वांछनीय से कोई मेल नहीं खाती थी। सरकार ने कभी भी कुलपति से यह नहीं

पूछा कि डीन की अनिवार्य योग्यताओं को बदलने की क्या आवश्यकता आन पड़ी, क्या और कोई विकल्प नहीं मिल सकता था?

इतना ही नहीं अवांछित योग्यता के लोगों को डेरी विज्ञान का डीन नियुक्त करना कुलपतिओं के लिए एक मनोरंजन का साध्य बन गया क्योंकि जहाँ वांछित योग्यता नहीं थी वहाँ कुलपतिओं ने किसी स्वार्थवश वांछित योग्यता को ही बदल डाला और प्रबंधमंडल से अनुमोदित करवा लिया। इससे जिनको प्रशासनिक अनुभव प्राप्त कर कतिपय को और ऊपर बढ़ने के लिए एक सीढ़ी भी मिल सकी।

इस पूरे प्रकरण में राज्य सरकार में बैठे सम्बंधित सचिवों की भूमिका भी संदिग्ध बनी रही। लेखक ने यह भलीभांति अनुभव किया जब उसने जयपुर सचिवालय में एग्रीकल्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के लिए विदेशी अनुदान और उसकी कंसल्टेंट्स समिति द्वारा दी गई विस्तृत रिपोर्ट में फाइनेल चर्चा में भाग लिया। इस समिति को चेयर कर रहे थे एक अतिविरष्ट प्रशासन सचिवा मीटिंग में चर्चा के दौरान यह संहमति भी एकमत से बनी कि प्रदेश में इस अनुदान से संपन्न हुए कार्य संतोषजनक रहे, इस अनुशंसा के साथ विदेशी सदस्यों की रिपोर्ट स्वीकार कर ली गई।

चेयरमैन ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मीटिंग समाप्त कर दी और सदस्य खड़े होकर विसरजन करने लगे। आश्चर्य से उसी समय चेयरमैन ने मुझे देख कटाक्ष किया कि उदयपुर का डेरी कॉलेज बंद कर देना चाहिए क्योंकि वहाँ के छात्रों को नौकरी नहीं मिल रही। मैं भी चौंकि चलने के लिए खड़ा हो चुका था चेयरमैन का चलते हुए कटाक्ष करने मुझे आश्चर्यजनक है। रैरानी वाला लगा, बिना समय गवाए तुरंत ही मैंने कहा-"सर, मीटिंग समाप्त हो गई अथवा अभी चालू है?" उनके यह कहने पर कि मीटिंग तो खत्म हो चुकी। तब मैंने कहा कि सर इस रिपोर्ट में छात्रों को मिले रोजगार के जो आंकड़े दर्ज हैं वे केवल और केवल भरे डेरी कॉलेज के हैं जिन्हें सम्पूर्ण विश्व विद्यालय के लिए दर्शाया गया है। वास्तव में डेरी कॉलेज

के अलावा अन्य कोई कॉलेज इस तरह के आंकड़े अपने छात्रों के लिए एकत्रित नहीं करता।

इस प्रकरण से मेरी वो भावना सुदृढ़ हुई जो मैंने संगठित तरीके से भिन्न-भिन्न जगहों से डेरी कॉलेज के विरोध में चलाया गया अदृश्य प्रोग्राम महसूस किया था। मुझे तनिक भी अब (रिटायरमेंट के बाद) संसय और हिचकचाहट नहीं है कि वो विरोधी तत्व अभी तक सक्रिय बने हुए हैं जिससे डेरी कॉलेज बंद से बदतर होते हुए भी किन्ही देवीय कार्यों से स्थिर बना हुआ है बिना किसी आगे विकास किये।

इस बात को यहाँ प्रचारित करने का मेरा उद्देश्य एक अलग ही है और वह है छात्र वर्ग को दर्शकों से निरंतर धोखा, झूठे और मनगढ़ंत सूचनाएँ प्रकाशित कर कर, चार वर्ष का उनका अमूल्य समय और उनके माता-पिता का घोर परिश्रम से पैदा किया धन जो वे अपने पुत्र अथवा पुत्री पर व्यय करते हैं का दुरुपयोग। क्या कोई उपाय है इसे रोकने का? और जो नुकसान समय और धन का हो चुका उसकी भरपाई अथवा पाटन का? प्रदेश का यह दुर्भाग्य है कि हम ऐसी शासन व्यवस्था में जी रहे हैं जहाँ कोई जवाब देहि नहीं, कितना ही नुकसान कर दीजिए सरकारी धन का और स्टेकोहोल्डर के समय और धन दोनों का।

डेरी कॉलेज में अनियमितताओं के बारे में समय समय पर प्रकाशित खबरों से अखबार भरे पड़े हैं, कोई देखने वाला नहीं, भले ही वो भ्रष्टाचार निरोधी ब्यूरो हो अथवा राज्य की "पब्लिक एकाउंट्स समिति" ही हो अथवा कोई अन्य। सभी बेफिक्र और मूक, कोई हलचल तक नहीं। अंत में मेरी हार्दिक कामना है कि डेरी कॉलेज उदयपुर में छात्र स्नातक शिक्षा के लिए प्रवेश न लें, कहीं अन्यत्र शिक्षा ग्रहण करें जो उनके भविष्य के लिए कई विकल्प खोलें में सक्षम होंगी।

-प्रो. (सेवानिवृत्त) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व डीन, डेरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय,
(महाराज प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि) उदयपुर।

डमी स्कूल और कोचिंग का घातक गठजोड़:
भारतीय शिक्षा प्रणाली का गहराता प्रदूषण

गठजोड़ में तीन मुख्य खिलाड़ी हैं : कोचिंग माफिया, स्कूल प्रबंधन और नौकरशाही



प्रो. अशोक कुमार

भारतीय शिक्षा व्यवस्था आज एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है, जहाँ

जानार्जन का मार्ग धुंधला होता जा रहा है और सफलता का एक कृत्रिम बाजार फल-फूल रहा है। हाल ही में समाचार पत्रों में उजागर हुई 'डमी स्कूल' और कोचिंग संस्थानों के बीच की साठगांठ ने उस कड़वी सच्चाई को फिर से सतह पर ला दिया है। राजस्थान की राजधानी जयपुर से लेकर देश के अन्य शैक्षणिक केंद्रों तक, 'डमी मॉडल' एक ऐसी संक्रामक बीमारी की तरह फैल चुका है जो हमारी औपचारिक स्कूली शिक्षा की नींव को खोखला कर रहा है।

'डमी स्कूल' का सीधा अर्थ है- एक ऐसा विद्यालय जहाँ छात्र का नामांकन तो है, लेकिन उसकी उपस्थिति अनिवार्य नहीं है। छात्र अपना पूरा समय निजी कोचिंग संस्थानों में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में बिताता है, जबकि स्कूल

प्रबंधन भारी भरकम फीस लेकर कागजों पर उसकी 75 प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कर देता है। यह केवल नियमों का उल्लंघन नहीं है, बल्कि एक व्यापक संस्थागत भ्रष्टाचार है। इस गठजोड़ में तीन मुख्य खिलाड़ी हैं: कोचिंग माफिया, स्कूल प्रबंधन और नौकरशाही। कोचिंग संस्थान छात्रों को पैसेज बेचते हैं जिसमें स्कूल का डमी एडमिशन भी शामिल होता है। स्कूल बिना पढ़ाए मोटी रकम कमाते हैं और शिक्षा विभाग के अधिकारी अपनी मीन संहमति से इस अवैध कारोबार को संरक्षण देते हैं। यह विडंबना ही है कि जहाँ स्कूलों की कक्षाएं खाली पड़ी हैं, वहीं कोचिंग संस्थान खचाखच भरे हैं।

शिक्षा कभी एक पवित्र संस्कार और साधना थी, लेकिन आज यह पूरी तरह से कर्मांडेटी (वस्तु) बन चुकी है। जब हम शिक्षा के बाजारिकरण की बात करते हैं, तो हम उस नैतिक पतन की ओर इशारा करते हैं जिसे मैं "एजुकेशन पॉल्यूशन - शिक्षा प्रदूषण" कहता हूँ। यह प्रदूषण केवल पर्यावरण में नहीं, बल्कि हमारी सोच और दृष्टिकोण में भी घर कर गया है।

एक प्राणि विज्ञानी के दृष्टिकोण से देखें तो किसी भी जीव के सर्वांगीण विकास के लिए उसका प्राकृतिक परिवेश अनिवार्य होता है। छात्र के लिए स्कूल वह प्राकृतिक परिवेश है जहाँ वह केवल विषय नहीं सीखता, बल्कि सामाजिक संवाद, खेल, अनुशासन और नैतिक मूल्य भी

सीखता है। डमी मॉडल उसे इस परिवेश से काटकर एक कृत्रिम प्रेशर कुकर (कोचिंग) में डाल देता है। परिणाम स्वरूप, हमें रैंक होल्डर्स तो मिल रहे हैं, लेकिन संवेदनशील और जागरूक नागरिक खो रहे हैं।

आज तक की लगभग सभी सरकारी योजनाएँ और नियम इस डमी कल्चर को रोकने में विफल रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि हमारी नीतियाँ केवल सतही लक्ष्यों का इलाज करती हैं, मूल बीमारी का नहीं। बायोमेट्रिक उपस्थिति या औचक निरीक्षण जैसे उपाय केवल कागजी साबित हुए हैं क्योंकि निरीक्षण करने वाले हाथ भी उसी भ्रष्टाचार की गंगा में धुले हुए हैं। राजनीतिक नेतृत्व और नौकरशाही अक्सर इन संस्थानों के रसूख और चंदे के आगे नतमस्तक रहते हैं। जब तक शिक्षा का उद्देश्य केवल वोट बैंक और आंकड़ों का खेल रहेगा, तब तक वास्तविक सुधार की उम्मीद बेमानी है।

इस समस्या का एकमात्र स्थायी समाधान प्रवेश परीक्षा प्रणाली को जड़ से बदलना है। वर्तमान में, 12वीं की बोर्ड परीक्षा और प्रतियोगी परीक्षाओं के बीच का गैर ही कोचिंग और डमी स्कूलों की जननी है। जब तक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश का आधार केवल एक दिन की 3 घंटे की परीक्षा रहेगी, तब तक छात्र स्कूल जाने को समय की बर्बादी मानते रहेंगे।

हमें एक ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जहाँ निरंतर मूल्यांकन

होना चाहिए! छात्र के 11वीं और 12वीं के शैक्षणिक रिकॉर्ड को प्रवेश का मुख्य आधार बनाया जाए। बोर्ड और एंट्रेंस का एकीकरण होना चाहिए। स्कूल के पाठ्यक्रम और प्रतियोगी परीक्षाओं के स्तर में जो भारी अंतर है, उसे खत्म किया जाए। रटने की क्षमता के बजाय छात्र की स्वाभाविक योग्यता और संतुष्टि को परीक्षण होना चाहिए। नौकरशाही और राजनीतिक हस्तक्षेप से ऊपर उठकर अब समय आ गया है कि एक संवैधानिक रूप से स्वतंत्र भारतीय शिक्षा नियामक का गठन किया जाए। यह नियामक चुनाव आयोग या सीएजी की तरह स्वायत्त होना चाहिए।

इस नियामक के पास सख्त ऑडिटिंग, स्कूलों की भौतिक उपस्थिति और आधार-लिंकड बायोमेट्रिक डेटा का सीधा निरीक्षण, डमी नामांकन पाए जाने पर बिना किसी राजनीतिक दबाव के स्कूलों की मान्यता को कोचिंग के पंजीकरण को तुरंत रद्द करने का अधिकार। कोचिंग संस्थानों द्वारा किए जाने वाले फ्रामक वित्तीयों और अनियंत्रित फीस वसूली पर कानूनी लगाम लगाना। शिक्षा क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार की जांच के लिए एक स्वतंत्र विजिलेंस विंग के लिए शक्तिशाली होनी चाहिए।

डमी मॉडल का सबसे भयावह पक्ष छात्रों का गिरता मानसिक स्वास्थ्य है। स्कूल और कोचिंग के बीच संतुलन न बन पाने से छात्रों पर मानसिक दबाव बढ़ रहा है, जो अंततः उन्हें आत्महत्या जैसे आत्मघाती

कदमों की ओर धकेलता है। एक छात्र जो स्कूल नहीं जाता, वह एकाकीपन का शिकार हो जाता है। वह केवल फॉर्मूले और शर्टकट्स के बीच फंस कर रह जाता है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका कमाना नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाना है। यदि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को इस एजुकेशन पॉल्यूशन से नहीं बचा पाए, तो हम केवल डिग्रियां बांटने वाला कारखाना बनकर रह जाएंगे। डमी स्कूलों और कोचिंग माफिया का यह गठजोड़ राष्ट्र के बौद्धिक भविष्य के लिए एक कैसर है।

इसके लिए केवल कड़े कानून पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि एक प्रशासनिक इच्छाशक्ति और संवैधानिक स्वायत्तता वाले नियामक की आवश्यकता है। साथ ही, अभिभावकों को भी यह समझना होगा कि उनके बच्चे की रैंक से कहीं अधिक उनके बच्चे को फिफ्टेन के संतुलन में लाना है।

समय आ गया है कि हम 'शिक्षा बचाओ' को एक जन-आंदोलन का रूप दें, ताकि हमारा शिक्षा तंत्र फिर से ज्ञान, चरित्र और मानवता का प्रकाश फैला सकें। जैसा कि मैंने हमेशा माना है-जब तक जड़ें मजबूत नहीं होंगी, तब तक तान का वृक्ष फलदायी नहीं हो सकता। डमी मॉडल उन जड़ों को काट रहा है, जिसे रोकना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

-प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय



पंडित अनिल शर्मा

राशिफल

सोमवार 20 अप्रैल, 2026

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2083, रोहिणी नक्षत्र रात्रि 2:03 तक, सौभाग्य योग रात्रि 4:11 तक, गर कर्ण प्रातः 7:28 तक, चन्द्रमा आज वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेघ, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मीन, बुध-मीन, गुरु-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। रवियोग रात्रि 2:08 तक है। अमृत सिद्धि योग रात्रि 2:08 से आरम्भ होगा। भय रात्रि 5:51 से रात्रि 4:15 तक रहेगी। आज सायन वृष में सूर्य प्रवेश प्रातः 7:09 पर होगा। आज विनायक चतुर्थी। आज चतुर्थी तिथि का क्षय हुआ है। आज रोहिणी व्रत है। आज से ग्राम्य ऋतु आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौथाईया: अमृत सूर्योदय से 7:38 तक, शुभ 9:14 से 10:50 तक, चर 2:02 से 3:38 तक, लाभ-अमृत 3:38 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 6:49

मेघ
आज आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदोड़ रहेगी।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेंगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष
व्यावसायिक/आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आज मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगे। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आपसी मतभेद समाप्त होंगे।